

□□□□ □□□□□□□□□□

जनसत्ता 7 जून, 2014 : लोकसभा चुनाव में लगभग नश्विहिन हो जाने के बाद छह जून को माकपा के पोलिबि ब्यूरो की बैठक हुई,

और सात-आठ जून को केंद्रीय समलि की बैठक होने वाली है। यकष प्रश्न यह है की अभी की परिस्थलिबि में वामपंथ क्या करे।

इसी चार जून को माकपा की पश्चलि बंगाल राज्य समलि की बैठक हुई। अखबारों की खबरों के अनुसार, इस बैठक में स्वाभाविकतौर पर कुछ उत्तेजना रही। नेताओं से पद-त्यागने और पूरी समलि को ही बदल देने जैसी बातें भी की गईं। लेकिन सारी बात यहीं पर अटक गई की अगर नेताओं को हटाया जाना और समलिबि को भंग करना ही सारी समस्या का समाधान हो, तो उस ओर ब। जा सकता है। समस्या सरिफ इतनी-सी नहीं है। सबको हटा कर कुछ न। लोगों को ले आने से ही वामपंथ का आगे का राजनीतकि रास्ता खुलने वाला नहीं है। तब परि, ह। ब। में इस प्रकार के किसी भी रास्ते पर कदम ब।ाना आत्म-हनन के अलावा और कुछ नहीं होगा।

जहां तक राजनीतकि लाइन का सवाल है, कुछ लोगों ने शायद यह सवाल भी उठाया की कांग्रेस के प्रति कुछ नरम रुख अपनाने का नुकसान माकपा को उठाना प। है। इस पर पार्टी के महासचवि प्रकाश क्रात ने संवाददाता सम्मेलन में कहा की 'पार्टी ने तो इस चुनाव में कांग्रेस को पराजलि करने और भाजपा को टुकाने का आह्वान किया था। पराजलि करना और टुकाना दोनों ही समान रूप से की शब्द है, इसलि। क के प्रति नरम और दूसरे के प्रति की रुख की धारणा का कोई सवाल ही नहीं उठता।'

कुल मलि कर, जो बात सामने आ रही है वह सरिफ अभी की राजनीतकि लाइन से जु।ी बात नहीं है। इस पूरे पराभव के कहीं ज्यादा गहरे कारण हैं, और जरूरत उन पर ध्यान देने की है, न की कुछ अवांतर बातों पर मगजपच्ची की।

हम यहां पर माकपा के मौजूदा नेतृत्व की भारी राजनीतकि भूलों के इतहास पर नहीं जाना चाहते। इसमें संदेह नहीं की उन भूलों की वजह से ही माकपा ने क राजनीतकि पार्टी के लि। जरूरी अपनी आंतरकि ऊर्जा को गंवाया है। किसी भी जीवंत पार्टी के लि। जरूरी होता है की उसमें हमेशा तीव्र राजनीतकि सरगर्मलि जारी रहें। क समय में भारतीय वामपंथ में कृषि क्रांति के मुद्दों पर, भूमि-सुधार और पंचायती राज के सवालों पर भारी उत्साह-उद्दीपन था। केरल, पश्चलि बंगाल, त्रिपुरा में माकपा के नेतृत्व की सरकारों के कल में जो ब। काम की ग, वे सारे देश के लि। अनुसरणीय माने जाने लगे थे। इसी प्रकार, जनतंत्र की रक्षा और वसि्तिार से जु। भी ऐसे अनेक प्रश्न थे, जनि पर माकपा और वामपंथ ने आंदोलन की नेतृत्वकरी शक्ति की भूमकि अदा की थी।

लेकिन पछिले बीस सालों के घटनाक्रम में कुछ गलत राजनीतकि निर्णयों के कारण माकपा ने क ब। राजनीतकि ताकत के रूप में उभार के अवसरों को गंवा कर अपनी इस आंतरकि ऊर्जा को ही खो दिया।

वर्तमान माकपा नेतृत्व की राजसत्ता के प्रति प्रकट वरिक्तानि जैसे उसे राजनीति से ही वरिक्त कर दिया। संसदीय जनतंत्र में बड़ी भूमिका अदा करने की तैयारियों के बजाय उसका वर्तमान नेतृत्व नौकरशाही ढंग से पार्टी की जकड़ बंदी में ही मुब्तला रहा, बनिा इस बात की परवाह की। कि इसके राजनीतिक परिणाम क्या होने वाले हैं।

बहरहाल, अभी विचार का विषय है कि भारतीय वामपंथ केली आगे क्या?

जहां तक भूमि संघर्ष का सवाल है, ग्रामीण क्षेत्रों में आज यह विषय कतिना प्रासंगिक रह गया है, इस पर अध्ययन की जरूरत है। देहातों में भी पूंजीवाद के तेजी से हुए प्रसार से जो सामाजिक परिवर्तन हुए हैं, उन्हें समझने की जरूरत है। उसके क पहलू- जल, जंगल, जमीन पर कॉरपोरेट के कब्जे- के लेकर क प्रकार का आंदोलन मेधा पाटकर के नेतृत्व में आंदोलन की तरह के कुछ क नजीओ चला रहे हैं, जो आज आम आदमी पार्टी के झंडे तले राजनीतिक शक्ति ले रहे हैं। वे स्थानीय स्वायत्त संस्थानों केली भी वैकल्पिक सोच का मंच प्रदान कर रहे हैं।

देहातों में कॉरपोरेट के प्रवेश के लेकर क दूसरे प्रकार का संघर्ष माओवादियों ने छोड़ रखा है। आज के संचार-क्रांतिके युग में उस लड़ाई का कोई मायने नहीं दिखाई देता। उलटे शासक दल बड़ी आसानी से उसका इस्तेमाल जनता के जनतांत्रिक आंदोलनों के खिलाफ कर लेता है, जैसा कि पश्चिम बंगाल में सबसे नग्न रूप में देख गया।

वामपंथी अभी मूलतः ट्रेड यूनियनों के मोर्चे पर ही सबसे अधिक सक्रिय हैं। लेकिन इस क्षेत्र में क अरसे से शुद्ध अर्थनीतिवाद का बोलबाला है। सरकारी सहूलियतों और नाना कारणों से ट्रेड यूनियन आंदोलन में भी लंबे अरसे से क प्रकार का नहिाति स्वार्थ विकसित हो गया है, जिसके कारण इस क्षेत्र में भी वामपंथियों के दूसरी राजनीतिक पार्टियों की प्रतिद्वंद्विता का सामना करना पड़ा है। फिर भी, इस क्षेत्र में वामपंथ के आज भी क कबड़ी राजनीतिक ताकत माना जा सकता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में जातिवादी पार्टियों ने गरीबों में वामपंथ की जड़ों के जमने नहीं दिया है।

कुल मिला कर, कहा जा सकता है कि वामपंथ के काम का सामाजिक क्षेत्र कुछ सालों में संकुचित हुआ है। ऐसी स्थिति में वामपंथ कैसे अपने ली आगे का रास्ता बनागा?

अगर हम वामपंथ के संकुचित हो रहे सामाजिक आधार की इस पूरी परिघटना पर गहराई से गौर करें तो पांगे कि इसकी कोई ठोस वजह नहीं है कि शहरों और देहातों में स्थानीय स्वायत्त संस्थाओं की जनतांत्रिक राजनीति में वामपंथ की कोई राजनीतिक पैठ न बने। न इसकी कोई वजह है कि जातिवादी पार्टियां वामपंथ के रास्ते की ऐसी बाधा बन जां कि जिसे लांघा ही न जा सके।

दरअसल, यह पूरी समस्या वामपंथ की अपनी अंदरूनी समस्या है। तीन राज्यों में अपना वर्चस्व कयम करके अन्य राज्यों, खासतौर पर हृदिभाषी

प्रदेशों के मामले में उसने कुछ ऐसे मानदंड विकसित कर लिए हैं जैसे उस क्षेत्र में वामपंथ का कभी विस्तार संभव ही नहीं है। इसके लिए नवजागरण संबंधी तरकदारों ग, हृदि प्रदेशों में मध्यवर्ग का सही ढंग से उदय न होना और जातीय चेतना का अभाव, कुल मिलाकर इस क्षेत्र के लोगों के सांस्कृतिक तौर पर पछि पन के भी इसके प्रमुख कारण के तौर पर गिनया गया।

लेकिन आज की क्या स्थिति है? आज स्थिति इस हद तक बदलती जा रही है कि पश्चिम बंगाल और केरल तकमें, आने वाले समय में कांग्रेस या तृणमूल कांग्रेस की विपक्षिताओं का पूरा लाभ वामपंथ के ही मल्लिगा, इसे निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता।

और, गहराई से देखने पर जाहिर होगा कि पूरे हृदिभाषी क्षेत्र में भाजपा के उभार के पीछे ब पैमाने पर वहां मध्यवर्ग के उभार की भूमिका है, जिसने जातियों के दायरे के तो का भाजपा के प्रति अपना समर्थन जाहिर किया है। जबकि मध्यवर्ग का सचेत धर्म-नरिपेक्ष हस्सा वामपंथ की ओर नहीं, आम आदमी पार्टी जैसी पार्टियों की ओर देख रहा है।

मध्यवर्ग के बीच भाजपा का यह प्रभाव कतिना स्थायी होगा, यह विचार का विषय है। रोजगार-वहिन विकास के इस दौर में इसके स्थायी रहने का कोई तार्किक आधार नहीं है। लेकिन खतरा इस बात का है कि इसके पहले कि मध्यवर्ग भाजपा के मोह से मुक्त हो, भाजपा इसके सहारे आसानी से अपना विस्तार व्यापक किसान जनता के बीच कर सकती है। उसका प्रतिरोध करने में जातिवादी पार्टियों की असमर्थता इस चुनाव से जाहिर हो चुकी है। और मध्यवर्ग-किसान जनता की यह धुरी ही आने वाले दिनों में संघ परिवार के फसीवादी राजनीति के लिए रसद जुटा गी, इसकी आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। इटली के फसीवाद का इतिहास इसी बात की पुष्टि करता है।

मुश्किल सवाल यह है कि आने वाले चंद सालों में ही मध्यवर्ग के जसि ब हस्से का भाजपा से मोहभंग होने की संभावना जताई जा रही है, क्या उसका लाभ उठाने के लिए भारतीय वामपंथ तैयार है? या, अभी तक जैसा लग रहा है, इसका लाभ स्वाभाविक तौर पर या तो कांग्रेस के मल्लिगा, या आम आदमी पार्टी के, अगर वह वास्तव में क संगठित और समंजित पार्टी का रूप ले पाती है। इस पूरी जद्दोजहद में वामपंथ कहां है?

माक़मा समेत वामपंथ के अभी इसी मुद्दे पर सबसे गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। सबसे ज्यादा जरूरत इस बात की है कि वह अपने पूरे सांगठनिक ढांचे के उसकी सालों की जर्जर स्थिति से उबारने का उपक्रम शुरू करे। अपने जन-संगठनों के चंगा करे, उन पर नौकरशाही नेतृत्व के इशारों पर बैठा दा। ग। लुंज-पुंज और अयोग्य लोगों से मुक्त करके उन्हें जनता के विभिन्न तबकों के साथ जीवंत संपर्क के संगठनों में तब्दील करे। ग्रामशी ने सही कहा था कि पार्टी के संगठन का ढांचा तैयार कर देने से ही क्रांति नहीं हो जाती। उन ढांचों के जीवंत रखने में व्यक्तियों की भूमिका प्रमुख होती है। इस मामले में कुछ सीख तो कॉरपोरेट से भी ली जा सकती है।

पछिले दिनों भारतीय वामपंथ ने जसि चीज के सबसे ज्यादा गंवाया है, वह है बुद्धिजीवियों से अपने जीवंत संबंधों के। इसके कारण वामपंथी राजनीति में बाहर से न-न विचारों के प्रवेश के रास्ते रुक ग है, सामाजिक परिवर्तनों की गति के साथ तालमेल बैठाने वाले विचारों का प्रवाह रुक गया है। आज वामपंथी नेतृत्व के लिए क सबसे जरूरी काम है कि वह अपनी अंदरूनी ज ता के तो ने के लिए ही बुद्धिजीवियों के साथ अपने संपर्कों के किसी भी प्रकार से सुदृ करे।

सोलहवीं लोकसभा चुनाव के बाद आने वाला समय उतनी राजनीतिक उत्तेजनाओं का नहीं रहेगा। इस समय का पूरा लाभ उठा कर वामपंथ को अपने संगठनकिताने-बाने को दुरुस्त करके, जनता के बीच नाना रचनात्मककर्मों के जरा। बलिकुल नीचे के स्तर से का कनया नेतृत्व तैयार करने की प्रक्रिया पर बल देना है। जनसंगठनों के संचालन में नेताओं की सनकको पूरी तरह से ठुकराने की जरूरत है।

माक़्मा ने लगभग सा। तीन दशक पहले पार्टी को का जन-क्रांतिकिरी पार्टी के रूप में वक़्सति करने का नरिणय लयिा था- जनता के सभी हसिंसों की का प्रतनिधित्वमूलक पार्टी।

गुपचुप ढंग से काम करते हु। पार्टी पर अपनी जक़् बंदी कयम करने के ला। उत्साही पार्टी-नेताओं ने 'जन' को दबा कर 'क्रांतिकिरी' पर बल देना शुरू कर दयिा और इस 'क्रांतिकिरति' के आक़्षण के बल पर पार्टी पर नौक़शाही क़मान-प्रणाली आरोपति कर दी। आज पूरा वामपंथ 'जन' से कटे इसी 'क्रांतिकिरति' के रोग के परिणामों को भोग रहा है।

उम्मीद करनी चाह। कि अपने इस भारी पराभव से भारतीय वामपंथ सबक लेता हुआ 'जन-क्रांतिकिरी' संगठन के वक़्सि का ओर ध्यान देगा। वही उसके आगे का रास्ता भी प्रशस्त करेगा।

फेसबुक पेज को लाइक करने के ला। क्लिक करें- <https://www.facebook.com/Jansatta>

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के ला। क्लिक करें- <https://twitter.com/Jansatta>